

डॉ. जेफरी हडॉन, बाइबिल पुरातत्व, सत्र 8, द जियोपॉलिटिकल एरेना, भाग 1

© 2024 जेफरी हडॉन और टेड हिल्डेब्रांट

यह बाइबिल पुरातत्व पर अपने शिक्षण में डॉ. जेफरी हडॉन हैं। यह सत्र 8, भूराजनीतिक क्षेत्र, भाग 1 है।

पुराने नियम में, विशेष रूप से, और नए नियम में भी इज़राइली लोग एक बड़े भू-राजनीतिक क्षेत्र में भी रहते थे।

हमें यह भी समझना होगा कि बाइबिल काल में, इज़राइल और यहूदा के राज्य बहुत छोटे राज्य, क्षेत्रीय राज्य, स्थानीय राज्य थे, लेकिन वे वैश्विक साम्राज्यों के एक बहुत बड़े ढांचे में मौजूद थे। पहला साम्राज्य जिसके बारे में हम बात करने जा रहे हैं वह मिस्र है। फिर, हम असीरिया, बेबीलोन, बेबीलोनिया और फारस के मेसोपोटामिया साम्राज्यों के बारे में बात करेंगे।

और इनसे पुराने नियम के बहुत से इतिहास को आकार मिला, क्योंकि पुराने नियम के अधिकांश इतिहास में, इनमें से एक या अधिक को नियंत्रित किया गया था और उनका हिब्रू लोगों या इज़राइली लोगों पर आधिपत्य था। तो, हम उन्हें एक-एक करके लेंगे। फिर से, बस समीक्षा करने के लिए, मिस्र यहाँ है, फिर से, नील नदी, सिनाई, और फिर बीच की भूमि या पवित्र पुल, और फिर मेसोपोटामिया, जो फिर से, टाइग्रिस और यूफ्रेट्स नदियों ने यहाँ पर इन महान साम्राज्यों को जन्म देने में मदद की।

और बीच में, रेगिस्तान, लगभग अगम्य। इसलिए, सारी यात्रा और वाणिज्य तट के किनारे-किनारे जाना पड़ता था। ठीक है।

मैं जिन पहले लोगों के बारे में बात करना चाहता हूँ, वे फिर से, स्थानीय लेवेंटाइन लोग, स्वदेशी लोग हैं जो इज़राइलियों से पहले यहाँ थे और वे कनानी हैं। और कनानी लोग रहते थे, ऐसा धर्मग्रंथ में कहा गया है, घाटियों में और भूमध्य सागर के तट के किनारे। और वे इस्राएलियों की तरह सेमेटिक लोग थे।

और यदि कनानियों ने कुछ किया, तो संभवतः उनकी सबसे बड़ी विरासत वर्णमाला है। हम वर्णमाला विकसित करने के लिए कनानियों को धन्यवाद दे सकते हैं, जिसने क्यूनिफॉर्म और चित्रलेखों की तुलना में लेखन को बहुत सरल बना दिया। अब, आरंभिक कनानी लेखन भी क्यूनिफॉर्म में था।

एक उगारिटिक टैबलेट है। लेकिन उन्होंने 30 प्रतीकों या 30 अक्षरों का उपयोग किया। और वह यही था, मेसोपोटामिया के लोगों की तरह हजारों अलग-अलग प्रतीक नहीं थे।

और इससे यह बहुत सरल हो गया। कनानी बहुदेववादी थे और कई देवी-देवताओं की पूजा करते थे, जिनमें उनके मुख्य देवता बाल और एल, और अशतर और मोलेक और अन्य देवी-देवता शामिल थे। कनानियों की एक और विशेषता यह थी कि वे लेबनान में रहते थे।

और वह लेबनान के महान देवदारों के लिए प्रसिद्ध था, जिनके उपवन आज भी मौजूद हैं। यहाँ एक है। और वे थे, लकड़हारे ने उनका उपयोग किया और पूरे इतिहास में, प्रारंभिक इतिहास में, सोलोमन के मंदिर सहित निर्माण परियोजनाओं के लिए उन्हें काट दिया।

लेकिन अशूरियों ने अपनी इमारतों और आंतरिक सज्जा को सजाने के लिए लेबनान के देवदार को भी अशूर भेज दिया था। कनानियों के बारे में एक और बात यह है कि वे व्यापारी थे, वे सौदागर थे। वास्तव में, कानन नाम का अर्थ व्यापारी है।

और वे उत्कृष्ट नाविक थे और उनके जहाज भूमध्य सागर में चलते थे। और उनके पास कनानी बस्तियाँ, फोनीशियन बस्तियाँ थीं, हरक्यूलिस के स्तंभों या जिब्राल्टर की चट्टान तक, भूमध्य सागर के पश्चिमी किनारे पर, और बीच में हर जगह। कार्थेज फिर से एक बहुत प्रसिद्ध फोनीशियन शहर है जिसने अपना साम्राज्य, अपना क्षेत्रीय साम्राज्य, साथ ही इन अन्य स्थलों के साथ-साथ साइप्रस, सिसिली और क्रेते की शुरुआत की।

इन सभी में कनानी बस्तियाँ और प्रभाव था। अब, कनानी बनाम फोनीशियन मूलतः एक ही लोग हैं, बस अलग-अलग नाम हैं। फोनीशियन फिर से इज़राइल की भूमि के उत्तर में उत्तरी कनानी थे, जो अब लेबनान और सीरिया है।

नीचे उगारिट में शाही कब्रें हैं। हम अगली स्लाइड में उगारिट के बारे में बात करेंगे। लेकिन उगारिट की खोजों ने कनानी संस्कृति के बारे में हमारी समझ को बहुत हद तक परिभाषित और आकार दिया है।

1920 के दशक के उत्तरार्ध में, एक सीरियाई किसान पुरावशेषों में हल चला रहा था, और फ्रांसीसी, जिनके पास उस समय सीरिया पर फिर से जनादेश था, को बुलाया गया। मेरा मानना है कि उन्होंने 1929 में खुदाई शुरू की और एक स्थान पर एक विशाल कनानी शहर का पता लगाया। रस शमरा कहा जाता है। यह प्राचीन उगारिट है। उगारिट, इस मानचित्र पर, सीरिया के उत्तरी भाग का रास्ता है।

अब, महलों और मंदिरों के साथ, उन्हें क्यूनिफॉर्म गोलियों का भंडार मिला। इन्हें समझने के लिए यरूशलेम भेजा गया था। वे इसका अर्थ नहीं समझ सके क्योंकि यह वह कीलाकार आकृति नहीं थी जिसका उपयोग वे असीरिया या बेबीलोन से करते थे, जब तक कि एक छात्र ने यह नहीं पहचान लिया कि केवल 30 अलग-अलग प्रतीक थे।

यह वास्तव में एक वर्णमाला कीलाकार लिपि है। उन्होंने अनिवार्य रूप से एक नई भाषा की खोज की, एक कनानी भाषा, जो हिब्रू संज्ञानात्मक हिब्रू और अन्य पश्चिमी सेमिटिक भाषाओं के समान थी, लेकिन केवल क्यूनिफॉर्म में लिखी गई थी। पुनः, यह उगारिट और उगारिटिक ईसा पूर्व दूसरी सहस्राब्दी का है।

यह समुद्री लोगों के आक्रमणों से नष्ट हो गया था, उनमें से पलिशती भी थे, और मूल रूप से कभी भी पुनर्निर्माण नहीं किया गया था। इसलिए, अवशेष व्यापक हैं और संरक्षण की अच्छी स्थिति में हैं क्योंकि इसे अन्य स्थलों की तरह लगातार बनाया या बनाया नहीं गया था। अब, कनानी गोलियों, या उगारिटिक में लिखी युगैरिटिक गोलियों ने पुराने नियम के वृत्तांतों, विशेष रूप से भजनों की पुस्तक की हमारी समझ में एक बड़ी खिड़की खोल दी है।

और हम देखते हैं कि भजन की पुस्तक में समान भाषा का उपयोग किया गया है, केवल बाल या मोलेक या एल के बजाय, आपने यहोवा को ये महान कार्य करते हुए दिखाया है। और इसलिए मिशेल दाहुड सहित कुछ विद्वान, उगारिटिक और भजन की पुस्तक में काव्यात्मक अंशों के बीच संबंध बनाने के लिए प्रसिद्ध थे। और इनमें से कुछ, फिर से, विभिन्न संग्रहों में रहे हैं।

यहां सबसे आम प्राचीन कनान की कहानियां हैं, जो अभी भी फ्रैंक मूर क्रॉस के एक छात्र द्वारा लिखी गई हैं। उगारिट और उगारिटिक के बारे में बस एक अंतिम शब्द। कनानी संस्कृति और उगारिट जैसे स्थानों का इज़राइली लोगों पर बहुत बड़ा प्रभाव, नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

उनमें से एक बाइबिल पाठ में इसराइल के राजा अहाब द्वारा फोनीशियन राजकुमारी, रानी इज़ेबेल से शादी करने की बात कही गई थी। उसकी मुहर, जिसे मैं दो स्लाइडों में उछाल सकता हूँ, जिसका मैंने उल्लेख नहीं किया, यहाँ है। फिर से, इसकी प्रामाणिकता पर बहस होती है, लेकिन वह इज़राइल की रानी इज़ेबेल की वास्तविक मुहर हो सकती है।

वह पृष्ठभूमि में फोनीशियन या कनानी थी। हम सभी बुक ऑफ किंग्स में उसके कुख्यात कार्यों के बारे में जानते हैं। ठीक है, अब हम अपने पहले वैश्विक साम्राज्य की ओर आगे बढ़ते हैं, जो मिस्र, मिट्ज़राईम, फिरौन की भूमि है।

गीज़ा में पिरामिडों पर एक बहुत ही नाटकीय सूर्यास्त। और यह समझने में मदद करता है, और हम इसे फिर से कहेंगे जब हम कुलपतियों के बारे में बात करते हैं, जब इब्राहीम और सारा उत्पत्ति अध्याय 12 में मिस्र आए थे, अकाल के कारण, ये पिरामिड उस समय खड़े थे, और वे चार से 500 तक थे वर्षों पुराना। इसलिए, जब हम पिरामिडों के बारे में बात करते हैं, जो पुराने साम्राज्य की कब्रें, शाही कब्रें और अधिकारियों की कब्रें हैं, तो यह फिरौन के लिए एक अत्यंत प्राचीन स्मारक है।

मिस्र के बारे में बस एक छोटा सा परिचय. प्राचीन मिस्रवासी अपनी भूमि को काली भूमि कहते थे। और वह नील नदी के दोनों ओर की भूमि थी जो दक्षिण की ओर फैली हुई थी।

आसपास की भूमि, ब्लैक लैंड, फिर से, कृषि योग्य भूमि थी, सिंचाई से समृद्ध थी, और भोजन उगाने में सक्षम थी। आसपास की भूमि लाल भूमि, रेगिस्तान थी, जो नील घाटी के दोनों किनारों पर है। और इसलिए यह एक बहुत ही स्पष्ट व्याख्या थी कि मिस्रवासी स्वयं का वर्णन कैसे करते हैं।

मिस्र प्राचीन काल में काफी अलग-थलग था, फिर से, चारों ओर से रेगिस्तानों से घिरा हुआ था: अरब रेगिस्तान, या क्षमा करें, पश्चिम में सिएरा रेगिस्तान, सिनाई प्रायद्वीप और पूर्व में रेगिस्तान, साथ ही पूर्वी रेगिस्तान। दक्षिण में, विभिन्न मोतियाबिंद, नील नदी के तेज बहाव और नूबिया के रेगिस्तान, जो कि आधुनिक सूडान है, ने मूल रूप से इसे आसपास के बाकी देशों और साम्राज्यों से अलग कर दिया। तो, यह अलगाव में काफी विकसित और विकसित हुआ।

यह बताना महत्वपूर्ण है कि दो मिस्र हैं: ऊपरी मिस्र और निचला मिस्र। निचला मिस्र, फिर से, नीचे की ओर सोचो। नील नदी दुनिया की उन कुछ नदियों में से एक है जो वास्तव में उत्तर की ओर बहती है।

तो, नीचे की ओर, निचला मिस्र उत्तर में है, और ऊपरी मिस्र दक्षिण में ऊपर की ओर है। इन दोनों के स्वतंत्र राजा थे, ऊपरी और निचला मिस्र, और यह पुराने राजवंश, फिरौन नार्मर के शासनकाल तक नहीं था, कि ये दोनों एकजुट थे।

और तुम्हें वहां फिरौन से दोहरा मुकुट मिला है, कि वे एक राज्य में एकजुट हो गए। और वह, फिर से, पुराने साम्राज्य की शुरुआत में था। अब ध्यान दें कि नील नदी के किनारे की कृषि योग्य भूमि केवल 12 मील चौड़ी थी।

और इसलिए वह जीवन रेखा थी, वह मिस्र का जीवन था। नील नदी के बिना, मिस्र रेगिस्तान था, था, वहाँ कुछ भी नहीं था। तो, नील नदी बहुत, बहुत महत्वपूर्ण थी।

यह अर्थव्यवस्था और लोगों की आजीविका के लिए महत्वपूर्ण था। मिस्र का कालक्रम, प्राचीन स्रोतों के आधार पर, मिस्र के लिए दो अलग-अलग कालक्रम हैं। लेकिन ये वे हैं जिनका हम उपयोग करेंगे।

आप पुराने साम्राज्य की तारीखें देख सकते हैं। यह तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व, ऊपरी और निचला मिस्र एकजुट हैं। और यह पिरामिडों का युग है। यहीं पर पिरामिडों का निर्माण हुआ था।

और यह इन विशाल, विशाल, विशाल पिरामिडों का निर्माण करके उनके फिरौन के स्मारकीय स्मरणोत्सव का एक तरीका था। इसके बाद एक काल आया जिसे प्रथम कहा गया, उसके बाद एक काल आया जिसे प्रथम मध्यवर्ती काल कहा गया। तो, की अवधि, इनमें से तीन थे।

और ये आंतरिक संघर्ष, और कमजोर फिरौन, और शायद नियंत्रण के लिए प्रतिस्पर्धी फिरौन के काल हैं। और इसलिए वह, फिर से, प्रथम मध्यवर्ती काल था, लगभग एक शताब्दी। और फिर मध्य साम्राज्य, फिर से, मिस्र फिर से मजबूत हो गया।

और या तो प्रथम मध्यवर्ती काल का अंत, या मध्य साम्राज्य का प्रारंभिक भाग कुलपतियों का युग था। और हम इसके और अधिक प्रमाण बाद में इस स्लाइड श्रृंखला में और एक अन्य व्याख्यान में भी देखेंगे। दूसरा मध्यवर्ती काल वह काल था जब मिस्र पर विदेशियों, एशियाइयों का शासन था।

यूनानियों ने उन्हें हिक्सोस, विदेशी भूमि के शासक, या चरवाहा राजा कहा। आप उनके लिए अलग-अलग शब्द सुनते हैं। लेकिन ये एशियाई, कनानी, कहने को तो, वास्तव में निचले मिस्र, डेल्टा क्षेत्र पर शासन करते थे। अब, कुछ विद्वानों ने कहा है कि यह संभवतः यूसुफ को पद पर रखने का आदर्श समय है क्योंकि वह मिस्र चला जाता है और पोतीपर के अधीन एक दास के रूप में कार्य करता है।

और फिर अंततः, जैसा कि आप जानते हैं, वह फिरौन के अधीन मिस्र का वज़ीर बन जाता है। यह यहाँ हो सकता था, या यह मध्य साम्राज्य में हो सकता था। दोनों के पक्ष में तर्क और साक्ष्य हैं।

तो, हम बिल्कुल नहीं जानते। हम जानते हैं कि जब यूसुफ की मृत्यु हुई, और यूसुफ की मृत्यु के बाद, एक नए राजा ने मिस्र पर शासन किया और जो यूसुफ को नहीं जानता था। और तभी इस्राएलियों का उत्पीड़न शुरू हुआ।

तो यह संभवतः एक नए राजवंश या नए साम्राज्य को समझाने का बाइबिल तरीका है। यह नया साम्राज्य होता, जो तब होता जब मिस्र अपनी सबसे मजबूत स्थिति में था। अपने चरम पर, सत्ता लगभग 1550 से 1069 ईसा पूर्व तक रही। यह प्रवास और निर्गमन की अवधि है।

और उसका अंतिम भाग न्यायाधीशों का काल होगा। अब, न्यू किंगडम का क़ब्रिस्तान कर्णक से नील नदी के पार, जो दक्षिण में है, राजाओं की घाटी थी। अब नया साम्राज्य, फिर से, मिस्र अपने चरम पर, शक्ति, फिर से उथल-पुथल के दौर में गिर गया, जिसे तीसरा मध्यवर्ती काल कहा जाता है।

और ये, फिर से, मिस्र पर लीबियाई फिरौन, कुशाइट फिरौन और प्रतिस्पर्धी फिरौन द्वारा शासन किया गया था। और इसने इज़राइल को उन कारणों में से एक बना दिया जिसके कारण इज़राइल डेविड और सोलोमन के तहत संयुक्त राजशाही के तहत और प्रारंभिक विभाजित राजशाही के दौरान मजबूत हो गया क्योंकि मिस्र उथल-पुथल में था और वास्तव में विश्व मंच पर एक खिलाड़ी नहीं था। उसी समय, अश्शूर भी ऐसा ही था।

तो, एक प्रकार की शक्ति शून्यता की अवधि है। और जैसा कि मेरे एक प्रोफेसर कहा करते थे, जब बिल्ली दूर होगी, तो चूहे खेलेंगे। और इसलिए, जब साम्राज्य कमज़ोर होते हैं, तो क्षेत्रीय साम्राज्य फल-फूल सकते हैं और विस्तार कर सकते हैं।

10वीं शताब्दी के दौरान ऐसा ही हुआ था। इसके बाद वही काल आया, अंतिम काल के अंतर्गत मिस्र की सत्ता का अंतिम काल, 30वें राजवंश तक के अंतिम कुछ राजवंश। और यह 525 तक चला, वास्तव में क्लियोपेट्रा की मृत्यु तक, जब मिस्र पूरी तरह से रोमन नियंत्रण में आ गया।

अब, इज़राइल के साथ मिस्र की बातचीत की सूची में, आप उत्पत्ति 12, अब्राहम, 37 से 50, जोसेफ, निर्गमन, 1 और 2 राजा, इत्यादि देख सकते हैं। और मिस्र के फिरौन का नाम शीशक के नाम पर रखा गया है। लेकिन शीशक से पहले, यह इतिहासकारों के लिए महत्वपूर्ण है, और उनका नाम नहीं लिया गया है।

ऐसा क्यों? यह प्राचीन काल से बाइबिल के इतिहासकारों और मिस्रविज्ञानियों के लिए एक पीड़ादायक मुद्दा रहा है क्योंकि हम निर्गमन के फिरौन का नाम नहीं जानते हैं। हम उस फिरौन का नाम नहीं जानते जिसने इब्राहीम और सारा के साथ बातचीत की थी। और हम उस फिरौन को नहीं जानते जिसने अपनी बेटी का विवाह सुलैमान से करने दिया।

सुलैमान ने फिरौन की बेटी से विवाह किया। ये फिरौन कौन हैं? खैर, हम अनुमान लगा सकते हैं। और हम बहुत सारे अनुमानों का उपयोग कर सकते हैं और सुझाव दे सकते हैं।

लेकिन फिर भी, इस पर अभी भी बहस चल रही है। ऐसा क्यों? उनका कद इतना बड़ा क्यों है? और क्योंकि निर्गमन का फिरौन नपुंसक था, आप 10 विपत्तियों के बारे में सोचते हैं। हम इस बारे में बाद में बात करेंगे, शायद अधिक विस्तार से। एक नपुंसक फिरौन किसी नाम के योग्य नहीं है।

और इसलिए, मेरा मानना है कि यह आंशिक रूप से धार्मिक रूप से किया गया था। इसलिए, दुर्भाग्य से, इतिहास के लिए, हमारे पास फिरौन का नाम नहीं है। अब हाल ही में, मैं पिछले महीने मिस्र में था, और वहाँ एक सुंदर नया संग्रहालय है जहाँ सभी शाही ममियाँ प्रदर्शित हैं।

और मैं चारों ओर गया और हर ममी, हर फिरौन को देखा जो उनके पास थी। और मुझे यकीन है कि मैंने निर्गमन के फिरौन की आंखों या शायद आंखों के सॉकेट में देखा। लेकिन क्या वह अमेनहोटेप III था? क्या वह थुटमोस III था? अमेनहोटेप II? जो कुछ भी।

रामसेस द्वितीय? हम निश्चित रूप से नहीं जानते, लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि मैंने निर्गमन के फिरौन की ममी देखी थी।

एक अन्य चार्ट प्राचीन मिस्र के राजाओं के विभिन्न राजवंशों को दर्शाता है। और यह वास्तव में 31वें राजवंश या 30वें राजवंश तक जाता है, और फिर टॉलेमिक काल तक, और जब तक रोमनों ने सत्ता नहीं संभाली। पुराने नियम में मिस्र की एक महत्वपूर्ण भूमिका है।

पुराने नियम में मिस्र का प्रभाव है। और हमें यह भी समझना होगा कि नए नियम में, मैरी और जोसेफ शिशु यीशु के साथ बेथलहम से भाग गए और हेरोदेस महान के मरने तक मिस्र में रहे। और फिर वापस आकर नाज़रेथ में बसना सुरक्षित था।

और आप देखते हैं कि, फिर से, होशे में भविष्यवाणी की गई। और आप उत्पीड़न और मिस्र से पलायन के बीच उस सुंदर समानता को देखते हैं, और फिर यीशु के प्रारंभिक वर्षों के दौरान उसके माता-पिता द्वारा ऐसा किया गया था। तो, यहां बहुत सारे दिलचस्प कनेक्शन हैं।

हम फिरौन मेरनेप्ताह के बारे में बात करेंगे, जो वास्तव में इज़राइल का उल्लेख करता है। यह पहली बार है कि इज़राइल का उल्लेख किसी विदेशी शक्ति ने अपने स्टेला में किया है। फिरौन शीशक, जिसने मगिदो में पवित्र भूमि में एक महल का हिस्सा छोड़ दिया था, और फिरौन जिसने वास्तव में यहूदा के एक राजा को मार डाला था, मगिदो में योशिय्याह, 609 में फिरौन नेको, और इसी तरह आगे भी।

पुराने नियम में आप मिस्र के अन्य प्रभावों के नाम देख सकते हैं। निःसंदेह मूसा, याजक एली के पुत्र होप्री और पीनहास के नाम मिस्री थे। और कई कहावतों में मिस्र के समान समानताएं भी हैं।

तो, पुराने नियम में मिस्र की बहुत सारी समानताएँ हैं। यह एक प्रसिद्ध मकबरे की पेंटिंग है जिसे हम फिर से देखेंगे, जब हम कुलपतियों के बारे में बात करेंगे। लेकिन यह, फिर से, 12वें राजवंश के फिरौन, सेसोस्ट्रिस, उसकी कब्र है।

आपको उनकी कब्र की दीवार पर ये भित्ति चित्र मिले हैं, जिनमें कनानियों या एशियाई लोगों को व्यापार के लिए सामान, तांबा आग्नेय और जानवरों को मिस्र में व्यापार करने के लिए लाते हुए दिखाया गया है। और आप विभिन्न हेयर स्टाइल, विभिन्न दाढ़ी, हल्के रंग की त्वचा और रंगीन परिधानों को देखते हैं। बेशक, आप तुरंत कई रंगों के कोट में जोसेफ के बारे में सोचते हैं।

यह लगभग 1892 का है। फिर, मेरा मानना है कि यह निश्चित रूप से पितृसत्तात्मक काल के भीतर है। इसलिए, यदि आप इसका चित्रण चाहते हैं कि इब्राहीम कैसा दिखता था, तो यह एक है, और सारा, इस कब्र के चेहरे पर इन चित्रणों से एक अच्छा संकेत है कि वे कैसे दिखते हैं।

दूसरे मध्यवर्ती काल के दौरान हमारे पास मिस्र में हिकसोस, कनानी या एशियाई लोगों का शासन था, जिन्होंने लगभग एक शताब्दी तक मिस्र पर शासन किया था। और यह उनकी राजधानी थी, फिर से, नील डेल्टा में, फिर से, निचले मिस्र में, मिस्र के उत्तरी भाग में। और ये एक जगह है जिसका नाम है अवारिस।

और अवारिस की खुदाई ऑस्ट्रियाई अभियान द्वारा कई वर्षों से की जा रही है। और उन्हें वहां कुछ बहुत दिलचस्प चीजें मिलीं। जिनमें से एक वजीर की कब्र और एक नष्ट की गई मूर्ति है।

इसमें से बहुत कुछ बनाया गया है, संभवतः यह फिरौन की कब्र है, या माफ कीजिए, जोसेफ की। यह प्रतिमा संभवतः जैसी दिखती थी उसका पुनर्निर्माण है। और सवाल यह है कि क्या हम जोसेफ के चेहरे को देख रहे हैं? खैर, शायद, शायद नहीं।

लेकिन इससे हमें इस बात का अच्छा संकेत मिलता है कि यूसुफ संभवतः मिस्र की पोशाक में कैसा दिखता था। निर्गमन में, हम इस्राएलियों द्वारा निर्मित दो भंडार शहरों, रामसेस और पिथोम के बारे में बात करते हैं। इनमें से एक की खुदाई 1970 के दशक में जॉन हॉलिडे और टेल एस-मेस्कुडा द्वारा की गई थी। और वो वहां चल रही खुदाई की तस्वीर है।

कर्णक के मंदिर की तस्वीर और फिरौन थुटमोस III का चेहरा, संभवतः 18वें राजवंश में निर्गमन का फिरौन, लेकिन फिर भी, हम निश्चित नहीं हैं। और थुटमोस III के तहत मिस्र साम्राज्य अपने चरम पर था।

मिस्र ने फिर से विस्तार किया, इस संकीर्ण गलियारे से होते हुए, दक्षिणी लेवंत, फरात नदी तक चला गया। और वहां एक शिला स्थापित की, जो उनके साम्राज्य की उत्तरी सीमा को दर्शाती है। और ऐसा दोबारा 18वें राजवंश के दौरान हुआ जब मिस्र अपने चरम पर था।

प्राचीन मिस्र में बात करने के लिए एक और दिलचस्प शासनकाल अखेनातेन या अमेनहोटेप चतुर्थ का शासनकाल है, जो एक विधर्मी फिरौन था क्योंकि उसने पेंटीहोन या मिस्र की धार्मिक व्यवस्था को अस्वीकार कर दिया था और एक भगवान की पूजा करता था। वह एकेश्वरवादी थे। हालाँकि, वह देवता एटन पुत्र था।

यहाँ उसकी एक तस्वीर है जिसमें वह अपने बच्चे, अपनी पत्नी, नेफ़र्टिरी और, या क्षमा करें, नेफ़र्टिटी और बेटे, एटन को चूम रहा है, जो उन पर चमक रहे हैं। उनकी पत्नी, नेफ़र्टिटी की एक बहुत प्रसिद्ध प्रतिमा है। और यह, फिर से, एक कलाकार का चित्रण या तस्वीर है कि वह कैसी दिखती होगी।

उन्होंने राजधानी स्थानांतरित की, और हम यहां बाद में विस्तार से जाएंगे जब हम लक्सर और कर्णक नदी से लेकर तेल एल अमर्ना नामक स्थान तक पलायन के बारे में बात करेंगे। तो, अखेनातेन उस नई राजधानी का नाम है जिसे उसने बनवाया था। और यह कुछ दिलचस्प है।

जाहिरा तौर पर, उन्होंने इसे खरोच से बनाया था। रेगिस्तान में पश्चिम और पूर्व दोनों तरफ पहाड़ हैं। जहां उसने अपनी नई राजधानी बनाई, उसके आसपास के प्रत्येक पहाड़ के पश्चिम और पूर्व में वी-खांचे हैं।

इसलिए वह सूर्य के उगते और क्षितिज पर अस्त होते हुए उसकी पूरी सीमा देख सकता है। क्योंकि, फिर से, उन्होंने सूर्य को एकमात्र देवता के रूप में पूजा किया। अब, क्या उन्हें एकेश्वरवाद का यह विचार इब्रानियों से मिला? फिर, यह एक बहस का विषय है।

जब तेल एल अमरना की खुदाई की गई तो वहां जो पाया गया, और यहां तक कि खुदाई से पहले भी, वह अखेनातेन के अधीन मिस्र का विदेश कार्यालय था। और वह अपने नए धर्म में बहुत रुचि रखते थे, और उन्होंने स्पष्ट रूप से मिस्र की विदेश नीति और विदेश में मौजूद अपने सैनिकों की उपेक्षा की थी। इसलिए, उन्होंने वासल किंग्स और उनकी सरकार के बीच राजनयिक संवाददाताओं की एक श्रृंखला प्राप्त की और भेजी।

इन्हें एकत्र किया गया और विदेश कार्यालय अभिलेखागार में रखा गया और 19वीं सदी के अंत में खोजा गया, सबसे पहले मिस्रवासी अपने खेतों के लिए उर्वरक प्राप्त करने की कोशिश कर रहे थे। उन्हें मिट्टी की ये छोटी-छोटी गोलियाँ मिलीं जिन पर अक्काडियन क्यूनिफॉर्म लिखा हुआ था।

और इसलिए, वे उनके लिए कुछ धन प्राप्त करने के लिए उन्हें काहिरा ले गए, और यही बात पुरातत्वविदों की रुचि को आकर्षित करने वाली थी। और आखिरकार उन्हें अब तक अखेनातेन के विदेशी कार्यालय और शायद उससे पहले के कुछ फिरौन की 382 तख्तियाँ मिली हैं, या उनके बारे में पता है। इन्हें विलियम मोरन और एंसन रेनी ने विभिन्न प्रकाशनों में बहुत अच्छे ढंग से प्रकाशित किया है।

और वे बहुत नाटकीय ढंग से बताते हैं कि मिस्र के विभिन्न क्षेत्रों में, और इससे भी महत्वपूर्ण रूप से लेवांत में, यह भू-राजनीतिक स्थिति क्या है। और, फिर से, शकेम के राजाओं, यरूशलेम के

राजाओं, गेजेर के राजाओं से उनके संवाददाता हैं। और इसलिए, आपके पास कनान में चल रही भू-राजनीतिक गतिविधियों के बारे में अंतर्दृष्टि, बहुत मूल्यवान अंतर्दृष्टि है।

यह निर्गमन और विजय की सामान्य अवधि के दौरान सही है, इसलिए इनका अध्ययन करना बहुत दिलचस्प है। और फिर, लोगों के पढ़ने के लिए बहुत, बहुत अच्छे संस्करण उपलब्ध हैं। उन्नीसवाँ राजवंश बाद का राजवंश है, और फिर, इस पर रामसेस द्वितीय के शासनकाल का प्रभुत्व है, पूरी तरह से प्रभुत्व है।

उसकी तारीखें देखो. उनका शासनकाल बहुत, बहुत लंबा था। और वह एक कुशल निर्माता था, जिसने पूरे मिस्र में मंदिर, मूर्तियाँ और स्मारकीय वास्तुकला का निर्माण किया।

लेकिन उसका बेटा, रामसेस जितना ही महत्वपूर्ण था, और बहुत से लोग मानते हैं कि वह निर्गमन का फिरौन हो सकता है, रामसेस की मृत्यु के बाद उसका बेटा, ठीक है, मुझे लगता है कि वह 90 वर्ष से अधिक का था, उसका बेटा, मेरनेटा, कुछ गतिविधियाँ, विदेशी गतिविधियाँ भी कीं और कर्णक में मंदिर पर काम किया। लेकिन उसके पास विदेशी अभियान भी थे, और मेरनेटाह स्तेल बहुत, बहुत प्रसिद्ध है क्योंकि इसमें उसके द्वारा इस्राएलियों पर हमला करने और उन्हें नष्ट करने का उल्लेख है। इस्राएल उजाड़ दिया गया, और उसका वंश भी नहीं रहा।

फिर, यह लगभग 1205 ईसा पूर्व का है और संभवतः, निश्चित रूप से, किसी गैर-बाइबिल स्रोत द्वारा इज़राइल का पहला स्पष्ट संदर्भ है। और वहां उसकी एक तस्वीर है. अब, 1980 के दशक के उत्तरार्ध में, शिकागो विश्वविद्यालय के फ्रैंक युरको ने कर्णक मंदिर की दीवारों पर नक्काशी का अध्ययन किया और माना कि इनमें से कुछ मेरनेटा द्वारा बनाई गई थीं।

और उनका दावा है कि यहां ये आंकड़े उन इज़राइलियों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनका उल्लेख मेरनेटाह स्तेल पर किया गया है। तो, संक्षेप में, हमारे पास मिस्रवासियों द्वारा, इज़राइल की भूमि में, कनान में इज़राइलियों का पहला चित्रण, कलात्मक चित्रण है। और यह, फिर से, 1205 ईसा पूर्व है, ऐसा कहने के लिए।

वहां उनकी ममी और उनकी एक मूर्ति भी है। और फिर, मेरनेटा स्तेल और आसपास, यह मूल रूप से एक मंत्र है जिसे उन्होंने लिखा है, यह काव्यात्मक है, काव्यात्मक है, और यह उन विभिन्न भूमियों के बारे में बात करता है जिन पर उन्होंने विजय प्राप्त की या विभिन्न लोगों पर विजय प्राप्त की। और आप देख सकते हैं कि अशकलोन ने गेजेर, जेनोआम और फिर इज़राइल का उल्लेख किया है, जो बाइबिल के अनुसार उसे पहाड़ी देश में रखता है, जो स्वाभाविक रूप से वहीं होगा।

फिर, ये यहाँ अतिशयोक्ति हैं। उसने शायद अपने रथों से कुछ इसराइली किसानों को कुचल दिया था, उसे खत्म नहीं किया था, और उसकी प्रजनन करने की क्षमता को नहीं छीना था, लेकिन फिर से, मिस्र में अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए एक विजय स्तंभ पर अतिशयोक्तिपूर्ण भाषा का प्रयोग किया था। यहोशू 15:9 में एक दिलचस्प अंश, दिलचस्प पाठ है। और फिर, यह यहूदा जनजाति के विभिन्न प्रांतों या जिलों के सीमा विवरण का हिस्सा है।

और यहां लिखा है, पहाड़ी की चोटी से, सीमा नेफथोआ के जल के सोते की ओर जाती थी, एप्रोन पर्वत के नगरों से निकलती थी, और बाला की ओर उतरती थी, जो कि किर्यत यारीम है। ठीक है, नेफथोआ का जल, हम उसे यरूशलेम के पश्चिम के रूप में पहचान सकते हैं, इसे आज लिफ्टा कहा जाता है। और यह वास्तव में प्राचीन यरूशलेम के पश्चिम में पहला प्रमुख वसंत है।

परन्तु यहाँ का विचित्र नाम नेफथोआ का जल है। फिर से, हिब्रू में रचनात्मक रूप में, आप कहेंगे, मी-नेफथोआह। और आप वहां संभवतः मेरनेष्टाह का भ्रष्टाचार देख सकते हैं।

और इसलिए, मेरनेष्टा, मी-नेफथोआ, मेरनेष्टा के नाम पर नामित स्थान के इज़राइली इतिहास में संभवतः बहुत पहले से ही भ्रष्टाचार हो सकता है। ठीक है, अब इससे भी अधिक, मिस्र के स्टेला और मुक्ति तालिका के हिस्से यरूशलेम के पुराने शहर के बाहर पाए गए थे। फिर से, मिस्र, स्पष्ट रूप से मिस्र शैली, जिसमें कुछ कमल की राजधानियाँ भी शामिल हैं।

और यह मेरे शिक्षकों में से एक, गैबी बार कार्ड की राय है, कि वास्तव में न्यू किंगडम के दौरान उत्तर में यरूशलेम शहर के बाहर एक मिस्र का मंदिर था, शायद मेरनेष्टा के शासनकाल के दौरान। तो आपके पास साक्ष्य के छोटे-छोटे टुकड़े हैं, 19वीं सदी में कोबे ब्लेक के सेंट स्टीफंस में उसी खुदाई में कुछ अलबास्टर बर्तन मिले थे। ऐसा प्रतीत होता है कि ये मिस्र के किसी मंदिर या प्रशासनिक केंद्र से जुड़ते हैं, जो संभवतः पहले मेरनेष्टा द्वारा स्थापित किया गया था।

ठीक है, बाइबल में मिस्र पर ये टिप्पणियाँ हैं जिन्हें हमें पढ़ने की ज़रूरत है। और आप इसे समझ सकते हैं यदि आप उस संदर्भ को समझते हैं जिसमें वे लिखे गए थे। होशे, होशे का सुंदर उद्धरण, होशे, जब इज़राइल एक बच्चा था, मैं उससे प्यार करता था और मिस्र से बाहर, मैंने अपने बेटे को फिर से बुलाया, पीछे की ओर देखते हुए इज़राइल राष्ट्र के लिए मिस्र से पलायन, लेकिन साथ ही ईश्वर के एकमात्र पुत्र, यीशु मसीह को हेरोदेस की मृत्यु के बाद अपने माता-पिता के साथ मिस्र से बाहर बुलाए जाने और इज़राइल की भूमि पर वापस आकर नासरत में बसने की भी प्रतीक्षा कर रहा था। अपना मिशन पूरा कर सकते हैं।

इसके अलावा, पुराने नियम में, मिस्र में एक तरह की दिलचस्पी थी और आशा थी कि जब इज़राइल पर बेबीलोनियों द्वारा अत्याचार किया जा रहा था तो पुराने मिस्र इज़राइल की मदद के लिए आएगा। और परमेश्वर अपने लोगों, इस्राएल को चेतावनी देता है, और निम्नलिखित कहता है: देखो, तुम अब मिस्र पर भरोसा कर रहे हो, जो लाठी से टूटा हुआ नरकट है, जो उस पर भरोसा करने वाले किसी भी आदमी के हाथ को छेद देगा, जैसे कि फिरौन, मिस्र का राजा। जो उस पर भरोसा करते हैं। तो, मिस्र के महान, शक्तिशाली साम्राज्य को, इस समय तक तीसरी मध्यवर्ती अवधि के दौरान, एक कर्मचारी की टूटी हुई रीड कहा जा रहा था, फिर से, एक प्रकार का मार्मिक रूपांकन क्योंकि नील डेल्टा में पपीरस रीड बहुत प्रचुर मात्रा में उगते हैं।

यह वह सीमा है जिस हद तक स्वर्गीय राजशाही के समय तक मिस्र की शक्ति, महत्व और प्रतिष्ठा में गिरावट आई थी। ठीक है, हम दूसरे साम्राज्य, नव-असीरियन साम्राज्य की ओर बढ़ते हैं। फिर से, नव-असीरियन साम्राज्य पहले काला और आशोर, पहले की राजधानियों और फिर नीनवे में स्थित है।

यह फिर से पूरे मेसोपोटामिया को काला सागर की ओर उरुतु तक और फिर इस ओर, दक्षिणी लेवंत और बाद के राजाओं को कवर करता है। यह आठवीं सदी का राजनीतिक मानचित्र है, आठवीं सदी ईसा पूर्व। बाद में, असीरियन राजाओं अशर्बनिपाल और एसरहदोन ने मिस्र पर विजय प्राप्त की।

इसलिए थोड़े समय के लिए, नव-असीरियन साम्राज्य एक वैश्विक साम्राज्य था जिसने मिस्र तक के सभी उपजाऊ वर्धमान को कवर किया था। और यह एक बहुत ही क्रूर साम्राज्य था, जैसा कि हम यहां एक मिनट में देखेंगे। आमतौर पर इसका अधिकांश इतिहास नीनवे पर आधारित है।

यह एक बहुत बड़ा, विशाल शहर था। और पश्चिम की ओर, विस्तार जोर-शोर से शुरू हुआ। और वहां पहले भी अभियान चलाए गए थे।

लेकिन शल्मनेसर III नाम का एक राजा, और जब हम वीडियो खंड के दूसरे खंड पर ब्लैक ओबिलिस्क देखेंगे तो हम उसके बारे में थोड़ा और देखेंगे और बात करेंगे। शल्मनेसर III नौवीं शताब्दी का असीरियन राजा था, जिसने इज़राइल के अहाब के नेतृत्व वाले क्षेत्रीय राजाओं के एक पूरे गठबंधन के खिलाफ सीरिया में करकर नामक स्थान पर एक बड़ी लड़ाई लड़ी थी। इसकी सही तारीख हमें असीरियन अभिलेखों के कारण पता है, 853 ईसा पूर्व।

और, निःसंदेह, शल्मनेसर III ने जीत का दावा किया। लेकिन अधिक से अधिक, यह सीरिया के लिए ड्रा या हार थी क्योंकि उसने उस लड़ाई के बाद कई वर्षों तक पश्चिम में अभियान नहीं चलाया। और उसका दावा है कि इस्राएल के राजा अहाब के पास हजारों रथ और आदमी थे।

शायद नहीं, शायद, यह शायद एक अतिशयोक्ति है, लेकिन यह संभावना से अधिक हार थी या एक खूनी ड्रा था जिसने शल्मनेसर को कई वर्षों के लिए दक्षिणी लेवंत से दूर कर दिया। अब, बाद में, अहाब की मृत्यु के बाद येहू ने उमय्यद राजवंश को उखाड़ फेंका। और यही वह वर्ष था, 841 ईसा पूर्व में, शल्मनेसर लेवांत लौट आया और माउंट कार्मेल पर अपना मुख्यालय स्थापित किया।

इस्राएल के येहू सहित आसपास के सभी राजाओं को जागीरदार के रूप में कार्य करना था और अपने नए अधिपति को उपस्थिति और लूट देनी थी। अब, आठवीं सदी की शुरुआत में, अश्शूरियों का पतन हो गया। और संभवतः उस लगभग 50-वर्ष की अवधि ने इन क्षेत्रीय राज्यों को अपनी समृद्धि को नवीनीकृत करने और अपनी सीमाओं का विस्तार करने की अनुमति दी।

इस्राएल ने यारोबाम द्वितीय के अधीन ऐसा किया, जैसा यहूदा ने उज्जिय्याह के अधीन किया था। यह मूल रूप से योना की भविष्यवाणी या भविष्यसूचक पुस्तक की पृष्ठभूमि है, जिसे प्रभु ने नीनवे जाकर प्रचार करने और प्रचार करने के लिए कहा था। इस समय, नीनवे, पुनः, या असीरिया, बहुत, बहुत कमज़ोर था।

परन्तु उसे नीनवे में सफलता मिली, और बहुत से अन्यजाति और अश्शूरी प्रभु के पास आए। लेकिन यह सब एक असीरियन राजा टिग्लथ-पिलेसर III के प्रवेश के साथ बदल गया, जिसने

फिर से लेवंत पर असीरियन नियंत्रण स्थापित किया। वह एक शक्तिशाली सेना के साथ आया, इस्राएल पर कब्ज़ा कर लिया, और यहूदा को जागीरदार बना दिया।

उनके उत्तराधिकारी, शल्मनेसर वी और सरगोन द्वितीय, दोनों ने इज़राइल के उत्तरी साम्राज्य का अंत कर दिया। 722 में सामरिया का पतन हो गया और अधिकांश इस्राएलियों को निर्वासित कर दिया गया। यह समझना महत्वपूर्ण है कि असीरियन राजा मनोवैज्ञानिक युद्ध में निपुण थे।

उन्होंने आतंकवादी रणनीति का इस्तेमाल किया, और वे उन कैदियों और विषयों के साथ क्रूर व्यवहार कर रहे थे जो विश्वासघाती थे। और यदि उन्होंने एक ऐसे राज्य पर विजय प्राप्त कर ली जिसने उनके खिलाफ विद्रोह किया था तो वे क्या करेंगे, वे अधिकांश आबादी, लगभग पूरी आबादी को साम्राज्य के दूसरी ओर निर्वासित कर देंगे और फिर साम्राज्य के अन्य हिस्सों से विदेशी लोगों को क्षेत्र में आयात करेंगे। इस तरह, यह लोगों को उनकी भूमि से, उनकी मातृभूमि से अलग कर देगा, और एक या दो पीढ़ी के बाद, वे अनिवार्य रूप से वफादार असीरियन विषय बन जाएंगे।

वे अशूरियों की भाषा बोल रहे होंगे और उनकी सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताओं को मान रहे होंगे। यही विचार था। यह हमेशा काम नहीं करता था, लेकिन यह इज़राइलियों के साथ काम करता प्रतीत होता था क्योंकि वे फिर कभी पहचानने योग्य इकाई नहीं थे।

अब, अनातोलिया में युद्ध में सरगोन द्वितीय की मृत्यु के बाद, सन्हेरीब उसका उत्तराधिकारी बना। बाइबिल के इतिहास के संबंध में सन्हेरीब शायद सबसे महत्वपूर्ण असीरियन राजा था क्योंकि वह वह राजा था जिसने यहूदा पर हमला किया था। सरगोन की मृत्यु के बाद एक बार फिर सभी राज्यों में विद्रोह हो गया।

सन्हेरीब 701 में आया और यहूदा पर आक्रमण किया क्योंकि हिजकिय्याह के अधीन यहूदा ने विद्रोह कर दिया था। सन्हेरीब ने प्रिज्म खड़ा किया और बहुत गर्व से घोषणा की कि यहूदा के 46 शहर नष्ट हो गए और कई 200,000 लोगों को निर्वासित कर दिया गया। हालाँकि, उन्होंने यरूशलेम पर कब्ज़ा करने का कभी उल्लेख नहीं किया, और यह बहुत महत्वपूर्ण है।

हम इसके बारे में तब बात करेंगे जब हम 8वीं शताब्दी से निपटेंगे। उसके बाद, अशर्बनिपाल और एसरहद्दोन। एशरहद्दोन और अशर्बनिपाल अशूर के अंतिम दो शक्तिशाली राजा थे, और उन्होंने अशूर की सीमाओं को मिस्र तक विस्तारित किया।

अशर्बनिपाल की मृत्यु के बाद, गृहयुद्ध के बाद, असीरिया का तेजी से पतन हो गया, और बेबीलोनवासी बेबीलोन से उत्तर की ओर चले गए और असीरियन साम्राज्य को हड़पना शुरू कर दिया, जो तेजी से गिर गया। असीरियन बहुत ही क्रूर लोग थे। यहां टाइग्रिस नदी पर अपनी ऊंचाई पर निनेवेह कैसा दिखता था, इसकी एक तस्वीर या कलाकार की प्रस्तुति है।

अविश्वसनीय, सुंदर इमारतें। और वैसे भी, फिर से, यहां मुख्य असीरियन राजा और उन्होंने क्या किया, जैसा कि बाइबिल में उनका उल्लेख किया गया है। और शल्मन, शल्मनेसर III, आपके पास अशूरियों द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों का यह भयानक चित्रण है।

वे माताओं, गर्भवती माताओं को पकड़ लेते थे, उन्हें चीर देते थे, उनके अजन्मे बच्चों को बाहर खींच लेते थे, और जब माँ जीवित थी तब बच्चों के सिर चट्टानों पर पटक देते थे। विशिष्ट, लगभग वही चीजें जो आप आईएसआईएस से करने की उम्मीद करेंगे। खैर, आईएसआईएस वही कर रहा है जो प्राचीन अशूरियों ने पहले किया था।

टिग्लथ-पिलेसर का उल्लेख पुल के रूप में किया गया है, जिसमें उत्तरी इज़राइल के इन सभी शहरों को हड़पने और अशूरियों के सामरिया की राजधानी के पास पहुंचने पर एक के बाद एक पीछा करते हुए इन शहरों को हराने की बात कही गई है। शल्मनेसर वी और सर्गोन द्वितीय ने अंततः उत्तरी साम्राज्य का विनाश पूरा कर लिया। और फिर, निश्चित रूप से, सन्हेरीब, जिसका हमने अभी वर्णन किया है, उसके 185,000 लोग मर गए क्योंकि मृत्यु के दूत ने असीरियन शिविर का दौरा किया, और यरूशलेम बच गया।

एसरहदोन और अशर्बनिपाल का भी उल्लेख किया गया है। और इसलिए, यह, फिर से, एक क्रूर साम्राज्य है जो भय और आतंक द्वारा शासित भयानक चीजें करेगा। लेकिन जब वे गिरे तो जल्दी ही गिर गये क्योंकि उनके पास कोई सहयोगी नहीं था।

कोई भी उनके बचाव में नहीं आया. ठीक है, पहला, शाल्मनेसर III, यह करकर है, जो अहाब और उसके गठबंधन और असीरियन राजा के बीच उस प्रमुख युद्ध का स्थल है। जब हम संग्रहालय में अपनी प्रति देखेंगे तो हम ब्लैक ओबिलिस्क के बारे में अधिक बात करेंगे।

कुर्ख स्टेल, जो करकर की लड़ाई के बारे में बात करता है, और फिर उस ब्लैक ओबिलिस्क का क्लोज़-अप, जो हमारे पास संग्रहालय में है। और यह येहू को वास्तव में असीरियन राजा के सामने झुकते हुए दिखाता है। और यह समसामयिक कलात्मक शैली में किसी इस्राएली राजा का हमारा पहला चित्रण है।

और यह शल्मनेसर III के अभियानों को दर्शाता है, नीनवे से लेकर यहां तट के साथ-साथ इज़राइल तक। और आप उत्तरी सीरिया में करकर की लड़ाई देख सकते हैं। इसलिए, इन सभी क्षेत्रीय सेनाओं को अशूरियों से मिलने और संभवतः उन्हें हराने के लिए यहाँ तक यात्रा करनी पड़ी।

नीनवे में सन्हेरीब के महल में बहुत, बहुत प्रसिद्ध राहत पाई गई। और यह इस्राएल के एक शहर लाकीश, या क्षमा करें, यहूदा के एक शहर, के विनाश को दर्शाता है। और फिर, जब हम आठवीं शताब्दी के बारे में बात करते हैं तो हम इस पर फिर से विचार करेंगे।

लेकिन यहां हमारे पास यहूदियों को कैद में ले जाए जाने का चित्रण है। यहूदा राज्य के वास्तविक यहूदी। और भयानक अत्याचारों के साथ-साथ, यहां लोगों को खंभों पर चढ़ाया जा रहा है क्योंकि वे भागने की कोशिश करते हुए पकड़े गए थे।

सन्हेरीब के महल का सिंहासन कक्ष खुदाई से कैसा दिखता था, इसका कलाकार द्वारा चित्रण। और हां, सन्हेरीब के विनाश पर लॉर्ड बायरन की प्रसिद्ध कविता, जिसे हम नहीं पढ़ेंगे। लेकिन वहाँ पूरी सेना के विनाश का वर्णन करने वाली सुंदर कविता है।

अशर्बनिपाल का महल। यह आप सभी को असीरियन दरबार की भव्यता और अविश्वसनीय सुंदरता का अंदाजा देने के लिए है। और उस सुंदरता में भयानक कसाईखाना भी था।

यहां अशर्बनिपाल और उसकी रानी अपने बगीचे में एक पार्टी का आनंद ले रहे हैं, अपने असीरियन शैली के कप से शराब पी रहे हैं। जबकि यहाँ बायीं ओर उनके एक शत्रु, एक अरब सरदार, जिससे वे लड़ रहे थे, का कटा हुआ सिर लटका हुआ है। तो, आपके पास यह सुंदरता है, और साथ ही, आपके पास कटे हुए सिरों का यह भयानक, क्रूर, वीभत्स दृश्य है, जब वे बगीचे में अपने समय का आनंद ले रहे हैं।

यह फिर से एक आधुनिक असीरियन जुलूस की एक आधुनिक तस्वीर है। अब, इससे मेरा क्या तात्पर्य है? खैर, असीरियन आज इराकी ईसाई हैं। यह एक ईसाई चर्च है, एक संप्रदाय है, ऐसा कहा जा सकता है।

और यह एक असीरियन शादी है, और वे समारोह के लिए रथ के साथ फिर से असीरियन-शैली के कपड़ों का उपयोग कर रहे हैं। अब, दुख की बात है कि इनमें से कई लोगों को या तो इराक से भागना पड़ा या अपने विश्वास के कारण आईएसआईएस द्वारा मार डाला गया। अंततः, हमारे पास असीरिया की विरासत है।

धिक्कार है अशूर पर, जो मेरे क्रोध की छड़ी है, जिसके हाथ में वह लाठी है, वह मेरे क्रोध की लाठी है। तो, आपको यह समझना होगा कि इस्राएली लोग, यहूदा के लोग, यह एक बहुत ही कठिन उद्धारण है क्योंकि भगवान असीरियन नामक इन घृणित लोगों का उपयोग कर रहे थे, जो बहुत क्रूर और अमानवीय और दुष्ट थे, अपने फैसले की छड़ी के रूप में। और यशायाह अपने लोगों से कह रहा है कि परमेश्वर ने उनका उपयोग अपने लोगों को दंडित करने के लिए किया है क्योंकि वे आज्ञापालन नहीं करते हैं।

वैसे भी, जब हम नौवीं, आठवीं और सातवीं शताब्दी के पुरातात्विक साक्ष्यों की जांच करेंगे तो हम असीरिया का फिर से दौरा करेंगे। कई शताब्दियों तक, असीरिया एक बहुत, बहुत शक्तिशाली साम्राज्य था जिसने लेवंत और बाइबिल के इतिहास पर स्थायी प्रभाव डाला। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

यह बाइबिल पुरातत्व पर अपने शिक्षण में डॉ. जेफरी हडॉन हैं। यह सत्र 8, भूराजनीतिक क्षेत्र, भाग 1 है।